Poorest Areas Civil Society (PACS) Programme
Case study template

आपसी एकता से बनी इबारत

ग्राम डोंगिला का टोला भोगताडीह जो बिहार राज्य के तहत जिला–गया, प्रखण्ड–बांके बाजार, पंचायत–टाडवा के अंतर्गत आता है वह कुल 46 परिवारों का गांव है। जहां 31 परिवार भुईंया (मुसहर), 3 घर अग्रवाल, 8 घर यादव, एवं 4 घर पासी समुदाय के लोग रहते हैं। इस गांव में महंथ रामगिरी के नाम से मठ के लिए 100 एकड़ जमीन प्राप्त है जिसमें 40 से 50 एकड़ जमीन गांवों के ही संपन्न परिवारों के हाथ बेच दिया गया है। साथ ही 1984 में भू–हदबंदी के तहत बिहार सरकार ने ग्राम भोगताडीह के 15 भूमिहीन परिवार के बीच 12 एकड़ 58 डिसमिल जमीन वितरण अंचलाधिकारी के द्वारा किया गया एवं परचा/प्रमाण पत्र भी दिया गया। सरकारी पहल से अमीन द्वारा जमीन की नापी कराकर दखल भी दिलाया गया। परंतु मठ के महंथ श्री रामगिरी के द्वारा पर्चाधारियों को खेती नहीं करने दिया गया। जब भी लोग खेती करने की कोषिष करते, महंथ के लठैत उन्हें मारकर भगा देते थे। साथ ही झूठे मुकदमों में फंसाकर हमेषा परेषान किया करते थे। पुलिस प्रषासन भी मंहथ के इषारे में कार्य करती थी। पर्चाधारियों के पास हर साल लगान की रसीद मौजूद होने पर भी पुलिस हमेषा भुईंया समुदाय के लोगों को परेषान किया करती थी। क्योंकि वे अनपढ़ थे। उनमें जानकारी का अभाव था। अंततः वे उस भूमि को छोड़ना ही मुनासिब समझा।

सन् 2004 में, प्रयास ग्रामीण विकास समिति के द्वारा पैक्स परियोजना के तहत जब ग्रामीण महिलाओं का स्वयं सहायता समूह बनाया गया तो ये घटना प्रकाष में आई। महिलाओं को प्रषिक्षण में बताया गया था कि एकता में बल होता है। व्यक्ति चाहे तो संगठित होकर कठिन से कठिन कार्य को आसानी से कर सकता है। ततपष्चात समूह की महिलाओं ने एक बैठक बुलायी। बैठक में यह निर्णय लिया कि क्यों न हम सभी महिलाएं संगठित रूप से पुनः उस जमीन पर कब्जा किया जाए। इसके लिए संस्था एवं बुद्धिजीवियों की मदद ली गई। सर्वप्रथम पूरे कागजात के साथ शेरघाटी अनुमंडल में मुकदमा दायर किया गया। साथ ही मीडिया एवं स्थानीय प्रषासन को मदद करने की अपील की गई। चारों तरफ से भर्त्सना भी हुई। फिर से महिलाओं की आवाज को पुनः दबाने की कोषिष की गई। परंतु इस बार महिलाएं तैयार थी। उन्होंने मोर्चा खोल दिया। जमीन पर पुनः कब्जा कर लिया। महंथ के गुण्ड़ों ने धावा बोल दिया। महिलाएं आगे आकर खड़ी हो गई। सामना किया। महंथ के गुण्ड़ों का वापस जाना पड़ा। आखिरकार न्यायालय से डिग्री मिली।

आज 15 भूमिहीन दलित परिवार अपना घर बनाकर रह रहे है। साथ ही खेती भी कर रहे है। बीच–बीच में परेषान करने की कोषिष की गई। परंतु लोगों की एकजुटत को देखते हुए दाल नहीं गली। जिसका श्रेय समूह की तमाम महिलाओं एवं विषेषकर समूह की अध्यक्ष श्रीमती अनिता देवी को जाता है।

परिणामत–15 परिवारों को निवास की समस्या थी जिसका समाधान हो चुका है। लोगों के पास खेती करने योग्य भूमि प्राप्त हो चुकी है। उस भूमि पर खेती की जा रही है जिसके चलते जीविकोपार्जन की समस्या हद तक समाप्त हो चुकी है।

प्रेरणा– एकता में बहुत बड़ी ताकत है। महिलाओं की समस्या का निदान महिलाओं के हाथ से करना बहुत आसान है यदि महिलाएं संगठित हो जाती है तो।